Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-2, September-2018

अनामिका और कात्यायनी की कविताओं में स्त्री विमर्श

डॉ0 मृदुल जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सारांश–
अनामिका व कात्यायनी 21वीं सदी की चर्चित कवयित्रियों में प्रमुख स्थान रखती हैं। दोनों की ही कविताओं में स्त्री–विमर्श के स्वर बुलंद हैं। दोनों ही कवयित्रियाँ स्त्रियों की अस्मिता, उनकी गरिमा को सुरक्षित–संरक्षित रखने हेतु संकल्पबद्ध हैं। इनकी कविताओं में नारी की सामाजिक–आर्थिक स्वातंत्र्य की मांग तो है ही, साथ ही रुग्ण परम्पराओं के प्रति विद्रोह के स्वर व पुरुष मानसिकता के बदलने का आग्रह भी सर्वत्र दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन दोनों ही कवयित्रियों की कविताओं में स्त्री–संघर्ष, नारी–विवशता, विरोध, शिक्षा व समानाधिकार और समाज में संतुलन की पुरजोर वकालत की गई है।

की वर्ड–

विमर्श – विचार–विनिमय
स्त्री–विमर्श – नारी–स्थिति के सुधार या अभ्युत्थान के लिए वैचारिक मंथन।
अभीप्सित – अभिलिषित, चाह

शोध पत्र

अनामिका और कात्यायनी हिन्दी साहित्य जगत में अपनी संवेदनशील कोमल भावनाओं के कारण एक विशेष स्थान रखती हैं। इनकी कविताएँ स्त्रियों की अस्मिता को तलाशती सजग नारी की प्रतिनिधि कविताएँ हैं। 'शीतल स्पर्श एक धूप को' (1975), 'गलत पते की चिट्ठी' (1979), 'समय के शहर में' (1990), 'बीजाक्षर' (1993), 'अनुष्टुप्' (1998), 'कविता में औरत' (2004), 'खुरदुरी हथेलियाँ' (2005), 'दूब–धान' (2007), 'कवि ने कहा' (चुनी हुई कविताएँ 2011), 'पचास कविताएँ' (नई सदी के लिए चयन 2012), 'टोकरी में दिगन्त' (थेरी गाथा 2014) ये अनामिका के ग्यारह काव्य संकलन हैं, जिनमें से 'कवि ने कहा' संकलन में पिछले काव्य संकलन से चयनित अठारह कविताओं को स्थान मिला है। कात्यायनी के प्रमुख काव्य संग्रह 'इस पौरुषपूर्ण समय में' (1999), 'जादू नहीं कविता' (2002), 'राख अँधेरे की बारिश में' (2004), 'फुटपाथ पर कुर्सी' (2006), 'सात भाइयों के बीच चम्पा' (2008) हैं। जहाँ विष्णु खरे कात्यायनी की कविता के बारे में ये विचार रखते हैं ''उन्होंने इस समय और समाज का भयावह, निर्मम, दावेदार यथार्थ देखा है इसलिए उनमें अपनी कविता और कविता मात्र के औचित्य, प्रासंगिकता और कारगरी को लेकर ऐसा आत्मसंघर्ष है जो शायद मुक्तिबोध और धूमिल के बाद दिखाई देता है''[1] वहीं मदन कश्यप अनामिका की कवताओं के प्रति अपना इस प्रकार का दृष्टिकोण रखते हैं ''समस्याओं और घटनाओं के देखने का उनका दृष्टिकोण एक ऐसी संवेदनशील स्त्री का दृष्टिकोण है, जिसके भीतर अभी भी निष्पाप बचपन बचा हुआ है। संवेदना का यही वह धरातल है जो हमारे समय में उन्हें विशिष्ट बनाता है।''[2]

इन दोनों की ही कविताएँ मन के भीतरी तहखानों में छिपी भावानुभूतियों को सहज शब्दों में पिरोकर पाठकों के सम्मुख रखतीं हैं। स्त्री विमर्श से तात्पर्य स्त्री जीवन से सम्बन्धित पहलुओं को साहित्य में स्थान देने से है। कुछ विद्वान स्त्री विमर्श का प्रारम्भ फ्रांसीसी लेखिका सीमोन द बोउवार की पुस्तक 'द सेकिण्ड सेक्स' (1949) से मानते हैं तो कुछ मेरी एलमन की पुस्तक 'थिंकिग अबाउट वीमेन' (1968) से। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की चर्चा बीसवीं

शताब्दी से प्रारम्भ हुई। आतिरा वी0 के अनुसार ''स्त्री विमर्श आज विश्व चिंतन की बहस में सबसे सशक्त चिंतन इसलिए है कि इसमें अरबों, करोड़ों स्त्रियों की दमन, अन्याय एवं उत्पीड़ने से मुक्ति की गाथा निहित है। स्त्री विमर्श ने सदियों से चली आ रही स्वत्वहीनता एवं खामोशी को तोड़ने का साथ अपनी चुप्पी को गहरे मानवीय अर्थ दिये हैं।''[3]

अपनी शक्ति और स्व को तलाशती अनामिका की निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में विशेष रूप से अवलोकनीय है–

सोचती हूँ जब मेरे आएंगे
छप्पर पर सूखने के दिन
मैं तो उदास नहीं लेटूंगी
कर लूंगी दोस्ती
और एक दिन किसी मनपसंद
कौए के
पंखों पर उड़ जाउँगी
सारी हद–बेहद के पार।[4]

अनामिका ने परिस्थितियों से समझौता कर यथा स्थिति पर विलाप करने के स्थान पर संघर्ष के मार्ग को अपनाया है। यहाँ पूरी शक्ति के साथ धारा के विपरीत तैरने का साहस है। अपनी अस्मिता का तलाशती स्त्री हर संभव अपने स्वाभिमान को बचाये रखना चाहती है और अभीप्सित को प्राप्त करने का हर संभव प्रयत्न भी।

कात्यायनी की कविताओं में नारी की स्वतंत्रता की माँग की छटपटाहट नज़र आती है। इनका काव्य संकलन 'सात भाइयों के बीच चम्पा', जो कि इन पाँच खण्डों– 'इस स्त्री से डरो', 'ऐसा किया जाये कि', 'भागने के खिलाफ', 'निविड़ तिमिर के साथ', और 'कही कोई आग है' में स्त्री की आज़ादी की लड़ाई को समर्पित है। 'वह रचती है जीवन और' नारी के अर्न्तमन से निकली कुछ ऐसी ही पुकार है–

जिसके बिना सब कुछ अधूरा है
प्यार भी, सौन्दर्य भी, मातृत्व भी.....
सोचती है वह
और पूछती है चीख–चीखकर।
प्रतिध्वनी गूँजती है
घाटियों में, मैदानों में
पहाड़ों से, समुद्र की ऊँची लहरों से टकराकर
आज़ादी! आज़ादी !! आज़ादी!!![5]

स्त्रियों की विवशता का एक कारण उनकी आर्थिक परतंत्रता भी रही है। शिक्षा के अभाव ने उन्हें दोयम दर्ज़े पर रहने को मज़बूर किया है। नारीवादी लेखिका रमणिका गुप्ता के कथन में सच्चाई है कि ''रोजगार के साथ पढ़ाई के कार्यक्रम चालू करने से सशक्तिकरण की प्रक्रिया को बल मिलेगा अभी वे नागरिक नहीं बस और हैं–पहचानहीन, व्यक्तित्वहन, सम्मानहीन। स्वावलम्बन से उनके व्यक्तित्व का विकास होगा जिससे उनमें आत्मसम्मान जगेगा, जो उन्हें शोषण से बचने के लिए प्रेरित कर सकता है।''[6]

अनामिका की कविता 'वाक्यसुक्तम् : एक अन्तर पाठीय प्रयाण' स्त्री के जीवन में भाषा के माध्यम से शिक्षा के महत्व को ही रेखांकित करती प्रतीत होती है। स्त्री ने शिक्षा के महत्व को स्वीकारा है और यह भी जान लिया है कि यही वह साधन है जिससे वह स्वतंत्र जीवन का स्वाद चख सकती है–

जैसे कि कुन्ती ने नवजात कर्ण को बहाया था
मैं उम्मीद रखती हूँ पानी पर

हरे–हरे पत्तों से आच्छादित एक टोकरी में
लहरों पर डोलती
पहुँचेगी आखिर कहीं तो
कभी तो किनारे लगेगी ये।
ले जाएगा इसको गोदी उठाके
भाषा का सारथी।[7]

आज की स्त्री–पुरुष के मध्य समानता की माँग करती है। कई बार ऐसे क्षण भी आते हैं कि उसे माँगने पर भी वह अधिकार नहीं मिल पाता। घर की चाहरदीवारी में उसे उसकी लघुता की याद दिलायी जाती है। चहुँतरफा शोषण कभी–कभी उसे विवश भी कर देता है और यह विवशता अनामिका की कविताओं में सहजता से मिल जाती हैं–

रोज निकाला जाता है मुझको
रोज केंचुए की तरह
गुड़ी–मुड़ी हो
फैल जाती हूँ फिर से!
वे कहतें हैं और कहतें हैं ठीक–
अपनी औकात जाननी चाहिए
पैर उतने पसारिये
जितनी लम्बी सौर हो।[8]

आज की स्त्री भोंथरी परम्पराओं को अपनाने से परहेज करती हैं। उसके मन में यह स्वभाविक तर्क सिर उठाता है कि धर्म के नाम पर, मान्यताओं के नाम पर, परम्पराओं के नाम पर स्त्री को ही बँधी–बँधाई लीक पर चलने को क्यों विवश किया जाता है? 'पार्क में बुढ़ापा' स्त्री के व्यर्थ की परम्पराओं के नकार को दर्शाती है–

हर करवाचौथ के दिन
छुप कर खाया
मैने मिरिच का अचार।[9]

निःसन्देह अनामिका की कविताओं में केवल स्त्री की पीड़ा या विवशता को ही स्वर नहीं मिले हैं अपितु खुलकर विरोध भी प्रदर्शित हुआ है। उनकी कविताएँ स्त्री के लिए आर्थिक स्वतंत्रता को तलाशती हैं, असमानता का विरोध करती हैं, रुग्ण परम्पराओं का विद्रोह करती हैं और एक स्वाभिमानी, स्वावलम्बी, दृढ़ निश्चयी स्त्री को उसकी पूरी पहचान के साथ उपस्थिति दर्ज़ कराती हैं।

यही नारी मन की दृढ़ता कात्यायनी की कविताओं में और भी अधिक मुखर है। कात्यायनी ने स्त्री के विरोध को अधिक तल्ख शब्दों में अभिव्यक्ति दी है–

देवता पर चढ़ाई गई
मुरझाने पर मसल कर फेंक दी गई
जलायी गई
उसकी राख बिखेर दी गई
पूरे गाँव में
रात को बारिश हुई झमक कर
अगले ही दिन
हर दरवाज़े के बाहर
नागफनी के बीहड़ घेरों के बीच
निर्भय निसंग चम्पा
मुस्कुराती चली गयी।[10]

इनकी एक अन्य चर्चित कविता 'हॉकी खेलती लड़कियाँ' में धारा के विपरीत दुर्द्धर्ष जीवनी शक्ति लेकर नाव खेने वाली स्त्रियों की मनोदशा को स्वर मिला है–

कोई डर नहीं
बॉल के साथ दौड़ती हुई
हाथों में साधे स्टिक
वे हरी घास पर तैरती हैं।
X X X X X X
चूल्हे की आंच से
मूसल की धमक से
दौड़ती हुई
बहुत
दूर
आ जाती हैं।[11]

इनकी कविताओं में नारी मन की वह संतुलित पुकार भी है जहाँ समाज को बदलने का आह्वान है। वे एक ऐसे समाज की कल्पना करती हैं जहाँ स्त्री–पुरुष परस्पर सहयोगी बन एक आदर्श स्थिति को जन्म दें–

जलें तिल–तिल
रोशनी के लिए
लम्बे सफर से हमसफर बनकर बढ़ें
आगे!
आज इस तिमिरावरण को भेद करके
ले नया विश्वास आगे बढ़ें
नव का वरें।[12]

इन कवियत्रियों ने समाज की इस मानसिकता को बदलने की चेष्टा की है जो भेद–भाव की नींव पर टिकी है। इनका स्त्री विमर्श एक व्यापक दृष्टिकोण लेकर प्रस्तुत है। ये कलमकार भेद–भाव पूर्ण व्यवहार भ्रूण हत्या, प्रतिबंधमय जीवन में जीते हुए आत्मदया का विलाप नहीं करती अपितु इसका तर्कमय विरोध कर संतुलित जीवन जीने की हिमायती बनी हैं।

निष्कर्ष–

अनामिका और कात्यायनी दोनों ने ही स्त्री समाज के प्रति अपनी भावानुभूतियों को सशक्त स्वर दिये हैं। स्त्रियों के प्रति भारतीय समाज में होने वाले दमन और उत्पीड़न के विरोधी स्वर इनकी कविताओं में देखने को मिलते हैं। दोनों ही कवयित्रियाँ स्त्री सम्मान को बचाये रखने का हर संभव प्रयत्न करती दिखाई देती हैं। इन्होनें समाज में नारी शिक्षा की पक्षधरता के साथ उनकी आर्थिक सुदृढ़ता, स्वावलम्बन और स्वाभिमान का मार्ग सुनिश्चित किया है। इन दोनों की ही कविताओं में समाज को बदलने का आह्वान है, जहाँ पुरुष मानसिकता के बदलने की गुंजाइश है। इनकी कविताओं में संवेदनशीलता और भावुकता के साथ–साथ शब्दों के ऐसे निमर्म प्रहार भी हैं जो सामाजिक यथार्थ को बेनक़ाब कर देते हैं।

संदर्भ संकेतः–

1. कात्यायनी, इस पौरुषपूर्ण समय में, विष्णु खरे, फ्लैप से उद्धृत।
2. अनामिका, कवि ने कहा (चुनी कविताएँ), मदन कश्यप, फ्लैप से उद्धृत।
3. आतिरा वी0, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, प्रस्तावना से उद्धृत।
4. अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ0 23–24
5. कात्यायनी, सात भाइयों के बीच चम्पा, पृ0 32

6. रमणिका गुप्ता, 'स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने,' पृष्ठ–16
7. अनामिका, पचास कविताएँ (नयी सदी के लिए चयन), पृ0 105
8. अनामिका, दूब–धान, पृ0 53
9. अनामिका, कविता में औरत, पृ0 76
10. कात्यायनी, कवि ने कहा (चुनी हुई कविताएँ), सात भाइयों के बीच चम्पा, पृ0 22
11. वही, पृ0 18
12. कात्यायनी, सात भाइयों के बीच चम्पा, प्यार को निर्बन्ध कर दो, पृ0 117

संदर्भ ग्रंथ–

1. अनामिका, कविता में औरत, साहित्य उपक्रम, प्रथम संस्करण–जनवरी, 2014/दूसरा संस्करण–2006
2. अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, पहला संस्करण–2005/पहली आवृत्ति–2009
3. अनामिका, दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड़, नयी दिल्ली–110003, दूसरा संस्करण–2008
4. अनामिका, कवि ने कहा (चुनी कविताएँ), किताबघर प्रकाशन, 4855–56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली–110002, संस्करण–2011
5. अनामिका, पचास कविताएँ (नयी सदी के लिए चयन), वाणी प्रकाशन, 4695, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–2012
6. अनामिका, टोकरी में दिगन्त (थेरी गाथा : 2014), राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, पहला संस्करण–2015
7. कात्यायनी, इस पौरुषपूर्ण समय में वाणी प्रकाशन, 21 ए दरियागंज नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 1999
8. कात्यायनी, सात भाइयों के बीच चम्पा, परिकल्पना प्रकाशन, डी0 68 निराला नगर, लखनऊ 226020, प्रथम संस्करण 2008।
9. कात्यायनी, कवि ने कहा, चुनी हुई कविताएँ, किताब घर प्रकाशन 4855–56, अंसारी रोड़, दरियागंज नई दिल्ली 110002, प्रथम पेपरबैक संस्करण 2012।
10. रमणिका गुप्ता, 'स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने, शिल्पायन, लेन नं0 1, वेस्ट गोरखपार्क शाहदरा दिल्ली 110032, संस्करण 2010